सामुदायिक रेडियो विषय पर राष्ट्रव्यापी परामर्श कार्यशाला, आबू में प्रारम्भ

समुदाय के विकास मे तीव्रता लाने में सामुदायिक रेडियो बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह माध्यम सामुदायिक सेवाओं तक पहुंच, समस्याओं के समाधान का अधिकार, न्याय दिलाने तथा स्थानीय संस्कृति एवं परंपराओं के उन्नमत का प्रमुख आधार है।

इस निश्कर्ष के साथ नौ श्रंखलाओं की पहली तीन-दिवसीय परामर्श कार्यशाला का उद्घाटन 21 दिसंबर 2012 को ब्रह्माकुमारीज़ के शान्तिवन परिसर आबू रोड़ में हुआ। यह कार्यशाला भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय एवं प्रमुख सामुदायिक मीडिया संगठन वन-वर्ल्ड फाउन्डेशन के सहकार्य से लोकप्रिय सामुदायिक रेडियो स्टेशन - रेडियो मधुबन में आयोजित की गई।

कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए सिरोही के जिला कलेक्टर मदन सिंह काला जी ने कहा कि भारत में रेडियो माध्यम के रूप में तभी सक्षम होगा जब स्थानीय आवश्यकताओं के अनुकूल कार्यक्रमों का निर्माण कर प्रासारित किया जायगा। उन्होंने आग्रह किया कि समुदाय के सहयोग से ऎसे कार्यक्रम बनाये जायें जिनका विकास के प्रति सकारात्मक रवैया हो।

सहायक वायरलेस सलाहकार आर के श्रीवस्तव (संचार एवं प्रौध्योगिकी मंत्रालय-भारत सरकर) ने बताया कि उनका मंत्रालय एवं सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, दोनों लायसेंस प्राप्त करने की प्रक्रिया में सहयोग देते हैं।
उन्होंने बताया कि सामुदायिक रेडियो स्टेशन के लिए 88 मेगाहट्ज़ से 108 के बीच फ्रिक्वेंसी निर्धारित की गयी है।

बी के मृथ्युन्जय (कार्यकारी सचिव ब्रह्माकुमारीज़) ने सामुदायिक रेडियो के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि टीवी और ईमेल की उपलब्धि अभी तक जन-जन तक नहीं पहुंची है, ऎसी स्थिति में रेडियो को अपने विस्तृत श्रोता समूह तक पहुंचने का विशेष लाभ है। दूर दराज़ के ग्रामीण क्षेत्रों तक अपनी पहुंच के कारण कम्यूनिटी रेडियो विशेष महत्व रखता है, इस तथ्य से अपनी सहमत्ति व्यक्त करते हुए मल्टीमिडिया चीफ भ्राता करूणा जी ने कहा कि संकट कालीन प्रबंधन को

ध्यान में रखते हुए कम्यूनिटी रेडियो को ग्रामीण लोगों को शिक्षित करने में विशेष पहल करनी चाहिये।

वन-वर्ल्ड फाउन्डेशन के निर्देशक राजीव टिकू जी ने भारत में कम्यूनिटी की समीक्षा करते हुए कार्यशाला का उद्देश्य स्पष्ट किया।
सत्र में जानकारी दी गयी कि देश भर में कम्यूनिटी रेडियो के लिए अब तक 1100 आवेदन प्राप्त हुए हैं, जिसमें से 386 आवेदकों को आशय पत्र जारी कर दिये गये हैं। उल्लेखनीय है कि देश में अभी तक लगभग 140 सामुदायिक रेडियो स्टेशन कार्यरत हैं।

कार्यशाला के विभिन्न सत्रों में कम्यूनिटी रेडियो स्थाप्ति करने के लिए लायसेंस प्राप्त करने की प्रक्रिया, क्षमता वर्धन, निरंतरता, तकनीकि प्रबंधन, विषय वस्तु निर्माण, स्वामित्व से जुड़े विभिन्न पक्षों की जानकारी दी जायेगी। कार्यशाला में राजस्थान एवं गुजरात के विभिन्न जिलों से स्वंयसेवी सगठनों तथा शैक्षिक संस्थानों के 50 से अधिक प्रतिभागी भाग ले रहे हैं। इन संस्थाओं को कम्यूनिटी रेडियो स्थापित करने में सहयोग देने के लिए शीघ्र ही ओर्छा, दरजलिंग, विशाखापटनम्, ऊटी, सहित देश के अन्य स्थानों में ऐसी कार्यशालायें आयोजित की जायेंगी।